– डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) - तृतीय खण्ड
(अष्टम पत्र - साहित्य सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना)

रस सिद्धांत

भरतमुनि के सूत्र "विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः" की व्याख्या संस्कृत साहित्य के आचार्यों ने की है। इनमें प्रमुख आचार्य हैं - भट्टलोल्लट, आचार्य शंकुक, भट्टनायक और अभिनवगुप्त।

<u>भट्टलोल्लट</u> : आचार्य भट्टलोल्लट भरत के रस सूत्र के प्रथम व्याख्याकार थे। इस तरह देखा जाए तो रस एक लौकिक अनुभव है क्योंकि इसका अनुभव मूलपात्र करता है। यह लोकानुभव ही रस है। रस रंगमंच की वस्तु है। वह अनुकार्य में उत्पन्न होता है। अभिनेता अभिनय करता है उन वास्तविक चरित्रों में रस की स्थिति थी। परंतु अभिनेता की वेश-भूषा के कारण एवं उसके कुशल अंग-संचालन, अभिनय, वार्तालाप आदि के सहारे दर्शक या सामाजिक, अभिनेता में वास्तविक चरित्र का आरोप कर लेता है। आरोप करने के कारण सामाजिक में भी रस की अनुभूति होती है। आरोप की बात मानने के कारण भट्टलोल्लट के मत को आरोपवाद भी कहा जाता है। स्थायीभाव को विभव से उत्पन्न मानने के कारण इसे उत्पत्तिवाद भी कहा जाता है।

<u>आचार्य शंकुक</u> : रस निष्पत्ति के दूसरे आचार्य शंकुक हैं। शंकुक के सिद्धांत को अनुमितिवाद कहा जाता है। नाट्य-प्रतीति एक लोक-विलक्षण प्रतीति है। उसकी विलक्षणता और कलात्मकता यही है कि वह मूलतः कृत्रिम और मिथ्या होते हुए भी एक तो कृत्रिम और मिथ्या प्रतीत नहीं होती साथ ही वह दर्शक को आस्वादरूप फल की प्राप्ति भी कराती है। इसी को शंकुक ने 'चित्रतुरंगवतन्याय' कहा है। अर्थात् जिस प्रकार चित्र का घोड़ा, घोड़ा ही कहलाता है उसी प्रकार नाट्य में अनुकरण करता नट राम है दर्शक (प्रेक्षक) ऐसा ही अनुभव करता है। इस प्रकार नट रस का आधार है तथा स्थायी भाव को रस में परिणत करने का श्रेय उसके अनुकरण अर्थात् अभिनय को है। शंकुक ने अनुकार्य, अनुकर्ता और सहृदय तीनों को दृष्टि में रखते हुए रस का विवेचन किया है।

Scanned with CamScanner

नटादि द्वारा नायकादि के भावों की अनुकृति ही रस निष्पत्ति है। सहृदय उसी का आस्वाद रस रूप अनुकृति की अनुमिति से करता है। यही अनुमिति आनन्द रूप है।

<u>भट्ट नायक</u>: भट्टनायक ने आचार्य लोल्लट और शंकुक के मत के संदर्भ में कहा है कि उनकी स्थापनाओं में सामाजिक की सौन्दर्यानुभूति के लिए युक्ति संगत और मान्य आधार का अभाव है।

भट्टनायक का मत 'भुक्तिवाद' कहलाता है। भट्ट नायक ने अपनी स्थापना की पुष्टि के लिए 'भावकत्व और भोजकत्व' नामक दो व्यापारों की कल्पना की। भुक्तिवाद में पारम्परिक अभिधा शक्ति द्वारा वाच्यार्थ बोध की क्षमता तो होती है, भावकत्व और भोजकत्व का सम्पादन करते हुए रस निष्पत्ति करा देने की क्षमता होती है। भट्ट नायक रस को अनुमेय या प्रतीत नहीं मानते वरन् भोज्य मानते हैं। संयोग का तात्पर्य भोक्ता-भोजक भाव है और निष्पत्ति का तात्पर्य भुक्ति है। उन्होंने रसानुभूति की प्रक्रिया की तीन अवस्थाएँ मानी हैं - अभिधा, भावकत्व और भोजकत्व। सामाजिक की व्यक्तिगत सीमा नष्ट हो जाते हैं और वह अखंड स्वप्रकाशानंद का अनुभव करता है, जो कि भोजकत्व की अवस्था है।

<u>आचार्य अभिनवगुप्त</u>: अभिनवगुप्त के मत को अभिव्यक्तिवाद कहा जाता है। वे भरतसूत्र के 'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ 'अभिव्यक्ति' करते हैं। संयोगात का अर्थ 'व्यंग्य व्यंजक संबंध' किया है। विभावादि व्यंजक होते हैं और स्थायी भाव 'व्यंग्य'।

अपने दार्शनिक मत की दृढ़ता होने पर भी उनका मत दार्शनिक आधार लिए हुए है और रसानुभूति की प्रक्रिया का यथार्थवादी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अभिनव गुप्त के अनुसार विभाव, अनुभाव और संचारी तीनों तत्व सहृदय बाह्य और स्थायी भाव सहृदय के चित्त में अभिव्यक्त और परिव्याप्त हो जाता है, जिस प्रकार मिट्टी से गंध जल के संयोग से मिट्टी में अभिव्यक्त और परिव्याप्त हो जाती है। अभिव्यक्ति रस की नहीं, 'रसना व्यापार' की होती है क्योंकि रस आस्वाद रूप होता है। जैसे दीपक पहले स्वयं प्रकाशित होकर अंधकार में रखे हुए घट को उसके मूल रूप में ही प्रकाशित कर देता है, उसी प्रकार विभावादि के संयोग से वासना लोकोत्तर रसात्मक प्रतीति के रूप में अभिव्यक्त होता है। (2)